पत्रिका

Mandsaur, 23/10/2022, Page 27

जब मिले गुल्लु भाई तो बह निकले परिजनों के आंसू, विश्वास ही नहीं हुआ

पत्रिका
ह्यूमन एंगल

मुंबई की संस्था ने 6 माह किया उपचार फिर रतलाम पहुंचे और यहां से मिला भानपुरा का पता

हरिकृष्ण मरमट
patrika.com

भानपुरा. परिजनों ने अब यह आशा छोड़ दी थी कि वे जिन्दा है...खूब तलाश की लेकिन नहीं मिले...याद है तो 17 मार्च 2020 का वह दिन, जब गुलाम हुसैन उर्फ गुल्लु भाई इंदौर में गुम हो गए। इस बीच खबर मिली कि गुलाम जिन्दा है तो परिजनों को ?विश्वास ही नहीं हुआ, जब साक्षात सामने देखा तो आंखों में आंसू बह निकले।

यह है मामला

गुलाम हुसैन को लेकर आजाद नगर इंदौर थाने में गुमशुदगी कि रिपोर्ट दर्ज कराई और परिवार जन भानपुरा निराश भाव से लौट आए। उनकी निराशा 21 अक्टूबर को आशा में बदल गई जब उन्हें यह पता चला कि गुलाम हुसैन मुबंई थाणे कि मानसिक लावारिस, भटके लोगों की शरण स्थली श्रद्धा रीहेबिलिटेशन फाउंडेशन में विगत 6 माह से हैं। छह माह पहले गुलाम हुसैन मुबंई की सडक़ों पर मिले। इलाज के बाद पता पूछा तो मोमिनपुरा रतलाम बताया, जहां वे करीब तीस साल पहले रहते थे।

मुंबई की सड़कों पर मिले थे

राधेश्याम कुमावत ने बताया कि गुलाम हुसैन हमारी संस्था को छ माह पहले मिले थे। मुबंई की सडक़ पर लावारिस अवस्था में भटकते हुए मिले संस्था के सदस्य इन्हें श्रद्धा रीहेबिलिटेशन फाउंडेशन ले आए। इनका उपचार किया। यह संस्थान अब तक 7000 हजार से अधिक रास्ते पर भटकने वाले मनोरोगियों को रास्ते से उठाकर, उनका उपचार कर उनके घरों तक पहुंचा चुकी है। गुलाम हुसैन के चार पुत्र एक पुत्री हैं।

रतलाम लाए तो भानपुरा का पता मिला

गुलाम हुसैन को लेकर संस्था के राकेश कुमावत व सहायक शुभम रतलाम लेकर आए और बताए पते पर ले गए, वहां पूछने पर पता चला कि यहां तीस साल पहले रहते थे। अब इनका परिवार भानपुरा में रहता है। इस पर हुसैन के दामाद पूर्व पार्षद इरफान अंसारी से फोन पर बात की वीडियो कालिग करके बताया। देखते ही परिजनों कि खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इरफान अंसारी अपनी सास रशीदा व पत्नी अर्शिदा के साथ लेने रतलाम रवाना हुए पर संस्था के सदस्यों ने मंदसौर आकर गुलाम हुसैन को परिवारजनों को सुपुर्द किया। दो माह की दवाई भी दी और कहा कि दो वर्ष तक संस्थान की ओर से ही निःशुल्क दवाई भानपुरा डाक से आएगी।